समर्पण

धर्मपाल जिनका नहीं, था केवल अभिधान ।
आजीवन ही सत्य का, किया सफल आधान ।।

निर्मलमन शितबुद्धियुत, आर्य चरित प्रतिमान ।
उर्वर प्रतिभा के धनी, आप्त सुजन सम्मान ।।

सुकवि मनीषी राष्ट्रहित, सजग समर्पित व्यक्ति ।
जिनसे पायी ओज की, कविता ने सम्पत्ति ।।

अब यद्यपि भू पर नहीं, मरघटदर्शनकार ।
चन्द्रमौलियशगानपटु, कृती कुरूपा सार ।।

उनको ही है समर्पित, कृति दर्शन अनुकूल ।
सिंचनरत जो थे सतत्, सत्कविता का मूल ।।

मरूसार

वसुतृष्णातुर नित्य जो, नीरस जीवनहीन ।
विषमताप गततुंगता, छलाभासयुत दीन ।।

श्रीरिपु पंथावरणपटुं, रजोनिमीलित नेत्र ।
मरू का यही चरित्र है, ग्राह्य इसे नव क्षेत्र ।।

अविदित जिसको विविधता, तरूतक जहॉ सशल्य ।
पीड्य चंड कर क्षेप से, देय इसे वैफल्य ।।

मेरू समुन्नत थिर सदा, धरणीधर है सत्य ।
व्योमाकांक्षी, सौम्य, शुचि, मुनिजन से आदृत्य ।।

शीतल भायुत विरज शुभ, धरता शीश वलक्ष ।
देता जग को वसुमयी, धाराएं शतलक्ष ।।

मेघों का भी ताप हर भर देता तारल्य ।
भ्रम अभ्रों का मिटाता, कृतयतिजनसाफल्य ।।

सर्जन के आरंभ सा धृति का सद्विस्तार ।
भरत भूमि सुकिरीट यह, संस्कृति का आधार ।।